1. Acc. No.:→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No.:→ 50530. नामदेव जी की परिचई।

3. Acc. No.:→ 50531. त्रिलोचन जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

4. Acc. No.:→ 50532. अंगद जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

5. Acc. No.:→ 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No.:→ 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No.:→ 50535. शकुनावली।

8. Acc. No.:→ 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No.:→ 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No.:→ 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No.:→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

॥श्रीरामजीसति॥ अपारख को अंग आरंभ॥ कबिरचंदन
रोषबदेसगया जनजनेकहैपला
स ज्योज्योचूल्हेफूकीये त्योंतौं
डुरगाबास १ कबीरपायपदारथ
पेलीया कंकरलीयाहाथी जो
डीबीछडीहंसकी चलेबगांकेसा
थ २ कबीरयेकअचंभादेषीया
हीराहाटिबीकाय परषणहारा
बाहरी कौडीबदलैजाय ३ कबी
ररामनाममनस्योलईया सबहा
मोलनतोल जेहरीपरषणजाण

३ आपौ षोवै बोल ४ कबीर हरि का कछु ना घटै घटै सो बेचण हार जनम गवायो आपणु ग्रहन रपावै बार ५ कबीर रंक चुरण ताकण फीरै हिरा पाया बाटी ताको मरमन जाण्या ही देषा देषी हाट ६ कबीर गुह डंबी षरी सो हा गया बिकाय षोटा बाधा गांठड़ी लेंके कछु ना हा जाय ७ कबीर पै कै मोती बीषरा अंधा निकस्या जाय जोति बिना जगदिस की जगत उलंबा जाय ८ कबीर सब जुग को धला जेसी आंधि गाय बछायासो

मरगया उनिबामचराय ९ कबी
ररामरतनधनपायकरी गांठबाधी
नषोल्ली नहीपरखुनहीपारषुा
नहीगाहकनहीमोल १० कबीर
रामपदारथमाकीमें षानीषुल्लीघ
टमाही सीतमीतहीदेतहै गाहक
कोउनाही ११ कबीरजहागाहकत
हामैनही मैतहागाहकनाही व
रच्याबीनफुल्यापीरै पकऊीस
बहकीछाह ॥१२॥ परखकोअंगच
लौ॥ कबीरसचजुगकुं गाहक
मीले तबगुणलाखबीकाय जब
गुणकुं गाकनही तबकोमीबदले

जाय १ कबीरा हरि हीरा जुग जौह
री ले ले माडी हाटि जब रामा लैगा
परषु तब हीरा की साटि २ कबीर सो
सनेही साध मिलै मिली मा ली करे बी
चार बोल्यां पिछै जाणीये जो जाको
बौहार ३ कबीर मेरी बोली पुरबी
ता हि न चिन्है कोय मेरी बोली चीन्हसी
ज्यो पुरब का होय ४ कबीर दे घरपर
बिलै परषर मूंषां बुलाय जैसी अंत
रि होयगी ताकै तैसा बोऊ मुषनी कसे
गी आय ५ कबीर जो जैसे उन मान का
ताकुं तैसा बोऊ मोती का गाहक न
ही तौ हीरा गाठ न षोली ६

कबीरसहजतराजुआरगके सर्वस
देहबातोली सन्नरससमाहीजीन
रस जैकोईजाणैबोल ७ कबीर
पहलीसबदपीछाणीयां पीछेक
हीयेबोल पारखुपरषणअंतरो
सबहमोलनतोल ८ कबीरराम
रसायणप्रेमरस ईब्रतसबदअ
पार गाहकबीननहीनीसरे मा
णिककनककूठार ९ कबीरफ
रिहिरामनमनमाहटा परणप्रा
णसुघट गाहकबिनानखुलई
हीराकेरीहाटि १० कबीरपेकोबा
रपरखिये नाहीबारूबार बालु

होयकीरकरी ज्यैछारैगैसौबार ११

कबीर रामरतनघटकोथली गाहक

आगैबोलि जबरमीलैगेपरषबा

लेगामहगैमोलि १२ कबीरहरिमोत

नकीमालहै पोइकाचेधगा जतन

करूजोषरा तुटैगीकहीलार १३

कबीरहंसातौमहिरानका उभीपउ

ग्रीयल्लीया बगलौकरिकरीमारीया

मरुनजाण्यौतां॥ १४ कबीरहंस

बगाकेपाहूणा कोइदसाकेफेरी

बगलाकहागरबियो बैठोपंखबबे

र १५॥ मांसअहारी को अंग चल्यौ॥

कबीरमासअहारी मानई परतष
राकसुजांण ताकी संगत मत करो
होय जगत मे हाणि १ कबीरमा
सषायतेमुढसबे मरपीवेसोन
च कुलकी उरमति ताकी दे राम
कहै तेउच २ कबीरमासषरायो
तेनषे सुरापानस्यो हेत तेनरउ
पड़े जायसी ज्यो मालीको षेत
३ कबीरयो कुकरको षाणहे म
निषदेहको षाय मनुडै भ्रमषम
लेतो नरकपडे नरजाय ४ कबी
रकलीमे जोराब्यापरी पोसतभं

जीअफिम रांमनामकैठेरह्या अम
लाका आधिन ५ कबीररांमसना
षेअरमद पिवै धनबिसास्योषा ही
जुवाषेलैचोरीकरै अंतसमुलाजा
य ६ कबीरषीचड़ी षांणषुबहै जैरु
कबाहै लुण हेड़ारोटिषायकै गला
कठावैकैरा ७ कबिराहरदी ज्ञानके
कैआकरीपावैही ८ पहलीकामबुरा
करे पीछेकैरफीरादी ८ कबीरगाई
नीस्ते मुरगीनीस्ते लिषीकतबाम
ही अपनागलाकटायकै नीसत
बसोकैवानाही ९ कबीरजीन्यास्वा

स्वादतै कुपत्नमेत्नैकाम अंगन्न
बीधाउपजे जायहीरहास्यौराम
॥१०॥सुंदरकोअंगचत्नयौ॥ कबी
रसुंदरयौकहे सुरगीहोकंतसुजारा
बेगमील्लोतुमआयकरीनात
रीतजीहोप्रान १ कबीरसुंदरादी
यासहेसडे सुरगीहोमेरापीव
जेलबीनमेंछाकोजीवजैपा
णीकाजीव २ कबीरसुंदरतौसा
ईजाजे तजेश्रानकीश्रास ताही
नकबहुंपरहरै पलनहीछाडैपा
स ३ कबीरजाकुनसुंदरजाणी

ये जारोकरैबिभचार तो हिनक
कुआदरे प्रेमपुरषभरतार ४ क
वीरइसमनकामैदाकरै न्हा न्हा
करीकरीपीसी तबसुषपावैसुंदरी
परमकुलकैसीस ५ कबीरचढी
ग्रापाडैसुदरी माघ्यापिवस्योषेल
दीपगजोया गयानका कामजलैज्यौ
तेल ६ कबीरसेरीसाकडी माती
चुराचुर कारणवंतीसुदरी रहैघ
कास्यौदुरी ७ कबीरकारणवंतीसु
दरी धीरेपावधरै योहरिजनहरी
नावका औसाजतनकरै ८

कुबेलीको अंगचल्यो ॥ कबीरक
डुईबेली का कडुवाही फलहोय
सीधनाव जबपाईये बेलीबी
छोहाहोय १ कबीरसीधनया
तौ क्यानया फुटीचोकुदिसबा
स माहा बीजअंकुरका फी
रउगरा की आस २ कबीरजेउ
ौतौ ब्रह्म मै अंनतकछुनही
जाय हरिरससीचा बेलडी क
देननीरफलजाय ३ कबीरसी
धसहजाबीरपडी अगनजला
वीमाही सीधबेलरोनुजली

अबफीरउगैनाही ४ ॥ बेली कौ अंग चल्यौ ॥ कबीर जालरग आयाल कउ। फूटी कुपलमेल्ली अबतो ऐसी होवनी नाकुबहुनबेल १ कबीर आगे आगे दौबले पीछै हरीयाहाय बलीहारी उसबेलीकी जउकाटा फलहोय २ कबीर जै काटै तमहम ही सा चैतो मुकलाय ईसगुणवंती कछुगुणकहानजाय ३ कबीर बीणबेलआकासफल अणव्याई को दुध ससेसंघकाधउहउ रमैबागकापुत ४

कस्तुरी या म्रग को अंग चल्यं

कबिरकीस्तुरीकुंडलबिषे म्रग ढुंढै बनमाही ऐसे घटि घटि रामसैा दुनीयादेषैनाही १ कबीरदेषै कोई संतजन पांचुं जनके हाथी जाकेपाचैा बसनही ताकेसंगनसाध २ १ कबीर साधकोईसुखा जिहपाचोरा षीचुर तिनकापाचैामोकल्या तिनतेसाहबदुर ३ कबीर सोनाहीबतनमेबसे मरमन

जारौतास कीसतुरीकामिरगाजेयो
फीरफीरसोधैघास ४ कबिरज्यो
नैनामैहतली तोबालीघटमाहि
मुरषलोगनजाणही बाहरसो
धराजाय ५ कबीरसंगतनइतो
कीजीया जैमनभयाकठोर मोने
जापाणीचढै तोउननीजैकोर ६
कबीरपसुबास्यैपानोपडेरकुरु
मैहीयामैबाज ओसरबोयानेनी
पजै लंबेपेकषीजुर ७ कबीरजा
लुईहैबकापरौग लंबेपेकषीजु
र पंषीछाहनबैसवै फललागैतौदुर ८

कबीरऊचाकुलकेबैसरौ बास
बध्याअसराल रामनावजाहो
नही जाल्यासबपरीवार ९
कबीरचंदनकेबीडै नीचान्नी
चंदनहोय बुडैबंसबमायतो
योमतबुमैकोय १० कबीरप
रसेचंदनबावनै बिषनतजे
नेवंग वोहचालैगुराअापरो
असाचुराचुराबाय ११ कबी
रलहरीसमंदकी मोतीबीबरे
आय बगलोसरनजाराही हं
साचुराचुराबाय १२ कबीरहंसा

बगानयेकरंग येकैतालचुगाही
येकढढोलेमंछली येकंमुकताह
लचांही १३ कबीरहंसागाहकप्री
तका तैाकारेउकजाही नाहीनीमा
गाकागल्ला फीरफीरजोठानवाय
१४ कबीरयेकसबदमैसबकह्या गु
रसीषकौसमजाय समजापास
मजैनही फीरफीरबुजेत्राय १५
कबीरमुरषकैदुरमतइति जबलग
नैरगजप्राणौ संठसमजायासम
जैनही कोटिकमीलोसुजन १६

तैं परी है ॥ देषत ही कहि सुंदर दौरि कै जाइ कै ना
गन सी पकरी है ॥ नैं दु परे अपनो अपने कर ।
पौछि कै सेज ही माँझि धरी ॥ प्यारे को प्यार
निहार यों रीझि नई चक चूर सषी सगरी है ॥
[illegible] ॥ सषी निमें बैठी तहां
ठाढे है है हँसत हां लाज निहौं गडि जाहुं नैंक
न उतें टरें ॥ सें पारि पौढे देन है न करे रिके
रि लागत लगाइ कहि सुंदर गरे री गरें ॥ तो हि
सौं तैं पूछत हौं पढि तूं जानत है कहि धौं
सुभाइ हाहा हा हरि कैं हरें ॥ मोहन के मंदि
र कैसी कैसी सुंदरी है है धौं कहा मोहन
जू माहि मन पाकुरे ॥ [illegible]

[illegible]

चाहि चित चौंपि चाइ लो। चनरे कि लजाइ
सुंदर छिडाइ रंग पुंज कै लपे। रही नष
घे विछाइ मानिक तें सरसाइ खेहर जरा
इकी प्रनरूप रूप डल्लियै। चौकी परि वे
ठी प्राइ सहेली सें फुरमाई रडी उजरा
ड्र बैको गाय तब ही ठपा। दषे हे सु माइज
कर ह्यो पछिता तइहि हिर पाइ नि कों कं वं
कैों नहें नये। ॥१९७॥ परकीया स्वय नप
तिका॥ यैसो नयो रहे मी नजें सें जल मा
झि मीन सुंदरआधी नग्र तिका मकेरल
नसों आली निमे मिली आली गली मैंहु
चली कोत्हि लाज निहें गडगई वाकी

विहसनसैं लागेपाजाइजहांजाउंगनैनकूं
ठौरठौवएकभांतिकोहैगावडैरोंप्रोजसन
सौंवातोंसतराइजवदेरिगहैग्राइपाहक
हियौंकह्यावसाइग्रैसेमानसनसैं ॥१९८

सामान्यावनितास्वाधीनपतिका ॥ रूपव
तौतरनीनिपुनिजानैंसकलकलानिग्रै
सीनहूंधनदेतहैधनमोहीपियप्रानि ॥
१९९ ॥ अभिसारिका ॥ दोहा ॥ वालपठावै
पीयकौंपीयपैंआपहीजाइ ॥ सोकामिनि
अभिसारिकानिकीलखैसामानिसिंगार
॥ २०० ॥ रीतिहैप्रभिसारिकानिकीलखै
सामानिसिंगार ॥ साहससंकयाकपरच्चा
तुरीतियैंकरैंसिंगार ॥ २०१ ॥ मुग्धाग्रभि

सारिकासवैया॥ पौंढेहुतेपलिकापरि प्यौमुषरउपरिग्रोरत्नाएद्युपराकीलाइ लवाहम्रलीनवलाइकुवातेंवनाइस्यरा केनराकीजेहरकेषरकाजवहीसुन्यौ देहरीसुंदरश्रानिश्ररा की श्रंगश्रनंगत रंगउठेपरमारकेज्यौंमुनिघोरघरारी ॥५२॥ मध्याभिसारिका॥ जौलोंहूनचली तौलोंकैसीकरीतलवलीहाहाचलिचलि ग्रलीलैतहमैछिपाइकैं॥ श्राइउठिमंदि रतेंकेसंचोपिचाहनिसौंइहादेषोश्राइ ढिगरहीचुपचाहकै॥ बैठिरहीकहाश्र वगौनाइतकीसीनाईघूंघरकेसुंद

रस को चरसपना इकै लेइन ही हियके हुला
स पूरे करि सब प्रीतम को॥ अधर पीयूष र
स प्पा इकै ॥ प्रौढा अभिसारिका ॥ पहलैं नयापु
ह को सौ उदो कहि सुंदर मंदर मैं चहुं ओर
न पुंकि आगें है आइ उठी बिसु हाइर ही
न रिगे हुं सुगंध घरू कोरन ॥ बिछिया घूघ
रू घम कै लहगा की झनीयौं मनो मधुरी
घन घोरन ॥ मसि कपा तिप कआ पुहि आइर
सो ज्यु जि बाइ लई तिरछी दृग मोरन ॥ ?
२०३ ॥ परकीया अभिसारिका ॥ स्याम को
लपा इसंदेस सप्थो सुनि कै सब सुंदर सा
हस बाढे तन के सब भूषन घोरि बिरो वि

३४

दिष्यो निके वेगि दैको करको है॥ घूघ
री को गहि डारी कसि अगिया नि के बंध
कसे गहि गाढे॥ जाइ पहुंची जहां वह प्यारी
तहां हरि हेरत है मग ठाढे॥ २०४॥ ग्रन्थपरि
श्रेसो पें कीजत कान्ह पें गौन कियो तम
ज्यो पहिलें पटकोरे॥ कों सिष देइ जो का
हू कैं पूछै स्रषी तब लीजत जैसें हडो
रे॥ २०५॥ श्राइ रूपाइ गुपाल को ग्वालि
गली नि मै जाइ कै घाइ लियो है॥ वा त
न श्रैसें गए जुरि कैं नगनो को उमान स
मान कियो है॥ सुंदर होत तार ही च किसी
तकि दंपति को श्रति गाढे हियो है॥ चाहि

यराति किपाहुरियौंसुदोउ मिलिकैं दि
नही मैं किपाहै ॥२०६॥ सामान्यापरिकिसार
का ॥ कारीघनघनकारी तनपहरें कारी८
ग्राषिनमें देषितेरोकारोकाजराइहै ॥ का
रोहीकुरंगलारघसिकैं लगायोअंगका
रचौवाकंचुकीसुमनलहीभिगाईहै
कारेपाटसुंदरपुवाएसबभूषनका
रीवेनीपीठिपरिछोरिदैंसुहाईहै ॥ औ
मसमैंअैसीकैकैं जाइमिली कान्हर८
लो ग्राजुहीतौसगरीकुराईकोमचाईहै ॥
२०७॥ चंद्रिकिसारि ॥ फूलसैंगुहीमांगचं
दनचढाइअंगाउमडीहैमनोगंगसरद

केनी रकी॥ सोहत है सब तनमे मोतिनके
आभूषन मोतिनकी ज्योति सौं मिली है
ज्योति चीरकी॥ मुसिक्याति आछी आति दं
तकी छिपे दुति तैसी है गुसाईं कहि सुंदर स
रीरकी॥ चांदनी सी बाल मिली चांदनी में
ऐसें चली जैसें छीरसिंधु में चलैं तरंग छी
रकी॥२०८॥ सामान्याभिसारिका दोहा॥
सुंदर सकल सिंगार सजि चली बाल लहि
ओस॥ जाइ आजु मनभावतै लैहूं धन
पिय पास॥२०९॥ इति अष्टनाइका॥ सुं
दर मुग्धा नारि कै लज्जा दै आधिकार
ला तक्रा महन्नद हूनि के मध्या को विरह

र ॥२०॥ सो प्रौढा जा नारि कै रस को व
हु विस्तार ॥ जो तिय धीरज धरि रहै कहि
ए जो धीरार ॥२११॥ जो नारी बिन धीरजहि
कहै अधीरा नाम ॥ धीरज धरै प्रधीरजहि
धीराधीरा बाम ॥२१२॥ जि पज्जु जे ष्याअ
धिक हित घर हित तसा क निष्ठासु ॥ पर की
पा कै सरस सई हो हन क रूस क्रास ॥२१३॥
सामान्या तिय कै रहै केवल धन सों काज
हि विधि नेदा तिया नि कै कहै महा कवि रा
ज ॥२१४॥ अष्ट नाइका ज्यां कहीं तां नां मी पु
नि हार ॥ जा के पिय परदेस कौं गवन करे है
तिय सोइ ॥२१५॥ रीति प्रवत्सत न र्त्तीको

नकौं आंसूं ऊंचे स्वास असगुन न हो
इ चलैन पिय करै हिये पाआस ॥२१६
मुग्धा प्रवत्सत पतिका ॥ सवैया ॥ सुंदर
बालम बात कहूं परदेस निकौं चलिवे
कौ चलाइ ॥ वान हू तें प्रीति पै नेक राघ
निसो धुनि वालके कानमें आई ॥ पूछिस
कैन सषी निसंकोचन सें। चल्तु गये
जी कराई ॥ नीचौ रहै करज्यौं वहु रैप फि
रि ऊंचे कौं नारि न नारि उठाई ॥२१७
मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ जो रजनय मथु
रा कौं चले गये वात सुनी हरि नंदल
लोकी वोलसकै न संकोचन तें सुनि

पीरी जई मुष ज्यों तिप्रिया की ॥ हंस पति
का ई लिलार सों बैठो है है उपमा कविसुं
दरता की ॥ देष मनो करकंप्राषु केषुप्रोषर
ओरी कछू है रह्यो है वचिवा को ॥ २१ ॥ प्रो
ढा प्रवत्स्यतभर्त्तृका ॥ यों मुरझानी सुनि हरि
गौन तुषार हनी मानो कंज कली है ॥ सुंदरसु
जसु गंध सिंगार बिसरि जनो छलनी ढ्लि है
छली है ॥ है रही या तन की पूतरी सी हलाए
तें न हली न चली है ॥ चाव न चाह न चेत क
हूं जब तें चर चा बलि वे की चली है ॥ २२ ॥
परकीया ॥ हरि जू मथुरा कों चले गये रीक
रहै गी जहां पहिली रति पां ॥ ब्रष नानसु

तावनितानिमैवैठेअचानकयोंहीस
नीवतियां॥२५॥सामान्याप्रवत्सतम
त्तेका॥वालमचलेविदेसकौंयांवाली
पुरनारि॥तोहियपैातेरविरहमाला
देहुउतारि॥२६॥अथउत्तमा॥पियपन
करैतियसोंनाहित॥तियनतजैप्रिय
प्रीति इह सोउत्तमनाइका॥उत्तमया
कीरीति॥२७॥सवैया॥एककरैकर
सोंकरआरतियाकौलियेंफिरैज्यौं
घनदामनिकोइहिभांतितौसुंदरका
रूलषपुनिकोपनहींकहुकामनि॥
रूरकौ॥जुगलोचनलालकेलालदे

है च हु जा मनि जा गेह है जा मनि के ॥ अपरा
धमन स्पे । अति प्रावति या गति भावै तउ पति
भा मनि कौं ॥ २८६ ॥ अथ मध्यमा लछन ॥
पिय के हित सौं होत हित अन हित अन हित
होइ ज्यौं देषै त्यौं अनुसरै नारि मध्यमा सोइ
॥ २६० ॥ सवैया ॥ अंग लागि जे गनि सजा के
जहां लगि ये अंग प्राए सुगंध की बास वही लल
...ालषि है लाल के पैने कटाछ न सूठि कै
...ठि दे वै ठिर है ॥ कवि सुंदर सौं हुकरी कर
...रि किती बिनती ज वका न करी ॥ तव
...राधा के चि सषि सौं हसि कै सौ हित कै न
ए अवसा सहीं ॥ २६१ ॥ प्रिय सौं प्रीतम
हित करे तिय रिसा इवे को ज सो इ हु आध

गोनाइका वरनत है कविराज ॥२६२॥
सवैया ॥ आवति जो देषी पीइ आगें आइ न ई तिय वैठारि कै उंचे की ये आदर सं गति है ॥ सुमन सुगंधसौं जसेइ के सप्री परा षिति है समै नयो ऐसो सेव कसौं पति है ॥ सुंदर जू वाइ जा मैं सुधा है मैं वालम के वदनतें वोल निक सत है ॥ इते पर वोलै तउ प्रीतम सौं मतराई जू कि रुहराइ बहिराइ सी उठति है ॥२६३॥ इति नाइका नि ॥ अथ पदमादिक पनं ॥ अवस्था निकेंदे आठ अपमन वषानि ॥ अवति पके

अंग चिन्ह तैं जाति च्यारि जानि कहैं
पद्मनी चित्रनी औ संषिनी नारि ॥ ह
स्तनि जो इन सबनि कौं बरनति हैं वि
स्तार ॥ २९ ॥ पद्मनी लछन ॥ कमल के
फूल की सी बास अंग सुकमार कमल
सी जानि जहां जल पें न लहिए ॥ चंद सो
बदन तन चंपक सो कुंदन सो बनी ठनी
सब ठौर जैसी तहां चहीए ॥ नावे देव पू
जा सेवा बचन सौं रूचि हिपली ये ला
ज मानु गति हंसन की गल हिये ॥ पोरे
षाइ पीक बैनी बिचछन नैंनी मृग नैनी
जा मैं गुन सुंदर ए पदमनी सो कहीये

२

अथ संषिनी चित्रनी के लछन ॥ षीनकटि पीनकुच मीनसे चपल नैन गज जैसी नीकी रेवा रमोरकी सी वानी है ॥ मधु को सो गंध जामें सुरति के जल को है लांबी है न ठेंगनी ॥ नि पातरी न म्यानी है सुंदर सलोन सु कुमारि जोनि जाहि बीचि से तफूल बरासो तहां मन्यो पानी है ॥ रीति सों नरति उपजोग ही में राति चित्र संगीत न लोंना वरि जो चित्र नी वषानी है ॥ २९८ ॥ संषिनी ॥ मोटी लांबी नसै देह छीन उंची मोटी करि

टेढी चितवनि कुच छोटे षोटे मन है ॥ जो
नि मै विगंध जाके काम घनो धनें बारउ
तावली चलै बोलै गाज तज्यो घन है ॥
रातो पर जावे न षरूर ति मै न लावै चार
ता तो गात रूपा हीन रोस ही सौं पन है ॥ दी
रघ है दांत पाइ पोरा न वहुत षाइ ग्रैसे जाके
चिन्ह सोई संषिनी को तनु है ॥ २९९ ॥ ग्रथ ह
स्तिनी लछणं ॥ मोटी देह मोटे ग्रोठ रूखे वा
[illegible]री ग्राप पोरी लाज पेट ग्नर षात है ग्रंघा
[illegible]के ॥ टेढे पाइ निकी ग्रांगुरी है टेढी सवे ठंग
नी सी क्रूर पुनि बोलै घहराइ कै ॥ काम कू
प की है ग्रंध मद के गयंद की सी सुरतिन की
पी जाइ जासौं सुष पाइ कै ॥ चलै मंदगति

गहैं कोंछे जाके नयेर है हस्तनी के लछन
ए दीजे जो दिषाइके ॥३०॥ इतिपद्मन्या
दि ॥ अपसंषिनी वर्नन ॥ दोहा ॥ जासैं
बातक है सुनै जियकौं बहु विश्राम । पा
सर है परतीतकै कहि एसषी सुबाम ॥३१
इहै कामै सषीनिके त्रियकौं भूषनवस
न बनावै ॥ दै उराहनौ सिष दै जानै करि
परिहास हसावै ॥३२॥ भूषनवस
नसवैया ॥ जोवनकौ जोबन सिंगार
कौ सिंगार किधौ रूपही रूप ऐसें अंग
देषियत है ॥ तेरे अधरनकी लाली रंल
षैलाल नके लोचनतौ सुंदर सुधा कैं
सीचयत है ॥ चीर पहरै तैं कोधरै गोरी

रमैरीवीरमंगाहै केचीरंतवैहीप्रोचीरिप
तहै जैसेलौंकरकागुहि लैवारनसंवारतिहै
सोतनिकी त्यौंषनिकरोतदिजीयतहै
॥३०३॥उराहनो॥ काहेहरहीहांमोनरेव
हहपरीकोनेनैननिसैंकहेकौानपैंनि
हारियतहै॥ षंजनकमलम्रगमीननि
केजैतवारसुंदरम्नएतोकोउयौंविदारि
तुहै॥ चातुरहे चालाकरैंनाइकेहेन्याइ
रेलाइकहेंमानसुनिंदरमारियतहै॥
वाकेहैविलासरहे बडाईकेवडहैतोविलो
कतहीप्रीगलेकोवेघडारियतहै॥३०४॥सि
षासवैया॥ लालनकोंतकिलागतिलोच
नलालकहांप्रेसोलोभलषाईए॥ जीहके

वातंदुरैन जहांदृगकैांनिवेहेगतहांमुक
रारग।।सुंदरजोवनरूपसमैंप्रेसीकोंनन
ईवलिवैसकेआए।।तीषीचितीवोन
लीकरीपैंचितडोनैकआरकीदीठिकवा
ए।।३०५।।औरसिघ्याकवित्त।।माइकेतून
वेलीपनैमेवलाइलौंसासरेकसेरहेगी।
कीजेकहाअपनोवसिहेकछुसासतोचा
हेकह्यौईकेहेगी।।सुंदरयौंजवहीतवहीखं
षिपांनरिलेहुतौनांतिरहेगी।आईकहूंहैं
विचारनदेष्योवहाईहरीतिधरीहीरहे
गी।।३०६।।परिहास्य।।कौनेहोंसवारीजा
हुनींतरहीप्यारीव्रहकोहेविजमारीजहि
वाहरिपठाईहेजादिनालगीहीदीठतादि

इकोकोपरिहासनाइकसे॥ देहैं कहादिवि
पानीकीघृडितैगागीरपीसैंजुमस्यौहै
गोरिकहाशिवसेंहसिपैं। विधुनाहर
नावजूरूठौधस्योहै॥ षलतग्राफजूवामें
प्रवैतुमदीजिएजोमेरोहारहस्योहै॥ ३०
९॥ नाइककोपरिहासनाइकासैं॥ गुलाव
केफूलकोतैलपांवरीलगाइ़जालमगम
दलायोग्राठजनसेजोफवेग्रंसेंस
पकियेंप्यारोग्रावतिहैप्यारीपाहि
प्यारीदेषिरूठिवैठीपीठिदेजहांजा
वै॥ काजरग्रधरमेंनजावककैतिलाटहै
नसोहैवैठ्योषिजोमतियांकह्योग्रली
जवैराधातोरहीलजाइहसेहरिहहरा

इहसि हसि गिरगई सुंदर सखी सवै ॥२१०॥ इति सखी लछनानि ॥ अथ दूतीवर्नन दोहा ॥ दूत पनैमै अतिनिपुनि सो कहि दूती वाम ॥ जो दे इवर ने विरह एदूतीनि के काम ॥ ३११ ॥ जो दे वो ॥ दूतीन को ढारू येआचरन देइ जाने पिय पासि पैठिवे की वात कहा जानी है मेर लाइवे कीनाज की जौ लाल वालि जाउ आतर है जो वह निपट अयानी है ॥ हौर सरीति के सुंदर रसिक की जु रस ही मैं पिलिवा है है वरस्तु वानी है ॥ पैना सी पठाई करि हरि अठाई परतीत मैं पठाई तव को है स्या नी है ॥ ३१२ ॥ अन्य अर्थ ॥ सौनें कौ सी डारि सुक मारि वारि सि बार सहे हे सुंदर रस्तु ठारि कठिन

ठीमैंसम[illegible]नीहै मोतीनकीमालामोतीवेस
रिपहरातमैंतोसिदसननमुषमोतीकोसोपा
नीहै॥लाईहैबुलाइकैरवलाईतैहुलाल
वालविलोकैहीमनोमैरोमानिहोमैजा
नीहै॥नैननमुषदेनचितचैनहोहुनैतै
वैनश्रैननमैननमैनकोसीमैननरानीहिकै
जाईहै॥३१२॥ग्रंषिननौहननैननकी
षुलैनिधिसोघविचातुरताकी।हाप
निसैनहियाकरिएमनैपोनसैंकूंप
तिकूंपलताकी।देषतहीवनिआवैकद
कहैंनाहीकैंनारिडुलैजवताकी॥नाही
रैनतवैकविसुंदरवैसारिकैपरिकैमु

क ताकी ॥ १३ ॥ नाइकाके पछिकी दूती ॥
दीठसौंन जोरै दीठि दै दै वैठे फेरि पीठ सुंदर
वासी ठक हो कहा करै तातीसौं ॥ तिहारै तोला
गी जक जाहि२ ल्यावर हौं तो फिरि जाती वेतु
म्हारीसौं न पातीसौं ॥ कोउ पचोराती दिनानि
व है न एकौ छिन नेह विन केसे केउ जोरे
तबातीसौं हैं तो पचि जाई२ हाहा षाइ गहे
हूं प्रापुही मनाइ ल्ले हुला हूले हुष्यो तीसौं
॥ १४ ॥ नाइकाव पछकी दूती ॥ तरुनत
नी व करि नैं हनिकौ तो निकारि जितीधी
रा ही मनाति तो तव गहे गो सुंदर कुंवरि
घनस्याम जू के दै बैं प्रसीका मिनीकौं

जानंकादहीओरदहैगो॥ मोरैतोमना
एतैंनमाम्नतहौलषैलालतैवदैगीमा
नीनीज्युमोनतवरहैगो॥जैसीनुषमे
सौंसतरानीसुनौमरीरानीदुहैनुषमे
नकीकहानीहुसिकहैगो॥३२५॥प्रन
च॥लालअपनेयअलिदतौनरसैएव
लिकहामयेचलिहस्यौनैकनंदगद
है॥वैठियतकोलिपताहिलिमिलिषैं
पतकिधौकीजियतकहिसुंदरयैंपं
दुहै॥हाहादषिसोहैतौहिकोटिरसो
हैकीयेअसैसमैयानतेरोअसोमन
यंडुहै॥कैसोनीकोनाइकलकलसुषद

हकहैकैसीनी कीचादिनीहैकैसोनीकोचं

दुहै ॥३१६॥ विरहनिवेदनवर्णनं ॥ मेरी
ग्रालीग्रागेकान्हिटैठीचालिचलिग्राए

ताघरतें ॥ षेलतनबोलतहसतहै जैसैं

जलविनमीन कैसैं हूंनपरतिकलिवै

छुधिविकलभई सुंदरसससतहै कहूं उ

रहैमननैकनसनारैतनतिहारैनिहारे

रिन्याइतरसतहै ॥ ग्राषनिमेंजोहानि

मेषमखिकोननिमैंठौरठौरढगतरै

गोरीवसतहै ॥३१७॥ नाइकाको विरह

निवेदन ॥ कहूंवनमालकहूंगुंजनकीमा

लकहूंसंगसषाग्वालसैसैहालतनहूलनिर

हे हे ॥ कहूं मोर चंद्रकाल कर कहूं पीतपट
मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारि दए हैं कुंड
ल अरु डोलन कहि सुंदर न बोले बोल लोच
है लोलमान कहूं हरि लए हैं ॥ घूंघर
की डोर कै कै चितयो की चोर करि ल
लन तो तव ही तें लोटपोट भए हे ॥ ३१८ ॥
अथ नाइका वर्नन ॥ दुहूंन करि सिंग
रस सार स हो त है ग्यानि ॥ जैसें वर्नीन
ह कात्यौं नाइका दि विषानि ॥ ३१९ ॥ पति
वर्नन ॥ सवैया ॥ मगमै परत पग सु
दरस्वरतउंग कोमलता को मतलते भिनि

कहूं सपहु निजानै दक्ष ॥ सो सबकों
समदेषै सदा नारहै जा सों सबै सु
षमानै ॥ च्यष्टबहे अपराधि नसो है
यैं षिजि कैर स ठानैं ई ठानैं सो स
ठ यों कपटी रतिकेलि मै सुंदर नाइक
आ रैं बषानै ॥ ३३ ॥ अनकूलल छ
नं ॥ महादेव जू के जी की जानि हू म
निहचै कें आपने हू जी की प्यारी ज
ह गिरवर की ॥ पेंडे चलें आवे अरु अं
ग धरै इते पर या हू तें अधिक प्रीति री
ति है री हर की । कपाल की माल गज

षाल व्याल काल कूर दाहिनी घाराषत
लट क्रि आगि गरु रकी ॥ वाइस्त्री सुंदरासि
वाके हित फेरि २ सुधारि २ धेरे कला सुधा
धरकी ॥ ३२४ ॥ [illegible] ॥ दुतिया
को देषि चंद दपत कौ दरसन दोषि वेकों
[illegible]रि प्राई आंगन मैं दार है ॥ इहवी चिमंदि
[illegible]कै नीतर तैं निकरि कै देषि हरि सुंदर
[illegible]वे ही एकवार है ॥ आभूषन वसन नव
[illegible] ए नाना नां गं तिन के ॥ कीनें नाना ना नौ
[illegible]ति प्रनगन तसिंगार है ॥ ऐसी परीसम
दीठि सोरह हजार परिमानौ नैन छुनै

नेसोरहहजारहै ॥३२५॥ [illegible] के लछन

मार्योहै फूलकीमालसौंवांधिकैतोहू

फिरै पुनि चौगुने चाइनि ॥ सुंदरवासौं

कितो षिजिए नतजैतऊ प्रापनेसी

लसुभाइनि ॥ वाहरिकाढि दियोहै कि

वारदै पोढिरही पर तानि गुसाइनि

जो पलमै पलषोलिकै देषै तौ पाइ

वै षो पलौटत पाइनि ॥३२६॥ दछ

के लछन ॥ वोलाइहै व्रुषनो नसु

तौ कौसुनायो है काहूर कौ नहु फेरे

सुंदर नंद के मंदर भीतर कैसो चिते

राचितेरोचितेरै॥राधिकादोस्विचलीम
निदेषनन्नेद्रनजान्योगईतवनेरै॥पी
ये तैन्नाइगईपियप्पारीपैंलैगयोलंग
रधामनग्रघेर॥३२१॥उपपतिलछन॥
उपपतिकहिल्जारसोंसठतातैंनिरधा
॥कवहूंहैंहिनहोहिल्छनवूलादिवि
र॥३२८॥अथासवैया॥लागिलेहुल
ाहुलेटिजाहुबेगहोहुलेहुलेहुकरैदो
नेहहीकीलगमै॥ग्रघरकोरसपीयंवा
तघूघ्योहिएन्नाइकैलीयंकानुमनुदी
पंमगमै॥सुंदरहरवरातउरमैघरघरा
त ऐसैंहैडरातन्नातिकंपुकरैपगमै॥

ऐसें दुरि दुलही सौं सुरति जो करै जीव
साचौ तिन जीवन को जीवन है जग मैं ॥
३२९॥ वैसिक वर्नन॥ जो नाइक गनि
कानि सौं करै सदा संभोग । वैसिक तासौ
कहत हैं धीर गुनी सब लोग ॥ ३३०॥ सवै
या॥ कुंदन सौं तन चंद सौं आनन कान
नि कै मुकतानि सवारी। देषत आरस
पान निषात भुजा मानौ सुंदर मोह
तारी। ऐंठी सी आंषि जमै ठी सी भौंह
पै नैक दुवौं छिलनैं सटकारी छैल छबीली
सौं कै मिलौ छबि जाकी मै ऐसी अनै
कनिहारी॥ ३३१॥ दोहा॥ पति उपपति

वैसकनिकौं कविकै है विचारि उत्तमम
ध्यमअधमपुनि एउ हैं त्रिप्रकार ॥ उत्तम
सोरठा ॥ रामा रहै रिसाइ पिपतन्मअतननि
कौंकरै जिमतैं रिसमिरिजाइ ॥ उत्तमकौं
न छन है ॥ सवैया ॥ आएचलेपलिकोपं
तली ललना की लाषी अंषियासतरानी
नी) केरो सनरी है तहां लै महारसिया
कीतवठानी ॥ पागै जो काहू सहेली
के करि सुंदर सोंधे व्रिपानकिपानी
ओपनो करलै करिकै हरिदोरतवो लए
रकिवानी ॥ ३३ ॥ मध्यमा ॥ जोपी रूठे ना
रि सोंरसनकरैन रिसाइ सो मध्यमत्र

टकरिल है तिय के जीय की भांइ ॥ ३३

४ ॥ सवैया ॥ ज्यौंही चलै आएलाल दीठि

भरि देषी बाल बैठि रही मुंह मूंदि जानैं

कंद कली है ॥ आदर न कछू कीयो आगे

ह्वै न पिय पल पैं बोली न बिलोकी नैं

र तैं न हली चली है ॥ कान्ह हू न कछु

जैसी देषी त्यों ही रह्यो पुनि लागी वा

रन सिंगार बोली आली है ॥ राधिका

की इहरी ति लषि मोहन की मन पै

आनंद के फलनि सों फली है ॥ ३५

अथ मालछन ॥ कामकेलि की बात कौं

कध्रूविचारनजाकै॥ सोवहग्रंथमता

जडहाइनसपनेहूपुनिताकै॥३३॥ येजु

चेलीहैग्रलीनिमैकात्हितहांलषिग्राइकेदी

वेधकाकै॥ हैंतागइग्रडिलाजनहीवेहसो

वहंमुषदेग्रचराकौग्रैसोमहाग्रतिढीठ

सुनिसुंदरहेइहजोगुनजाकौ॥ ताकीतू

चलावतिहैसपनैहूंनहुनदेषिस्रीमु

कौ॥३३॥ ग्रथमानीचतुर॥ दोहरा॥

मानीचतुरवरनतहैकविराइ॥ सवदे

केएकसेजानहुसवैसुभाइ॥३८॥ इक

नीनिजरूपपरिएकमानीनिजगेहि

सुंदरयौंद्वेभांतिकेनाइमानीहोइ॥३४०॥

रूपगर्वमानी सवैया ॥ आजुं समाजुम्र
नी निम तो करि आजु सखी हरि सों इहि ठ
नी ॥ बाकैं विलोकि विलास करै कहि सं
दर बोल है जारकिबानी ॥ उत्तर देइ कहा
हम सौं वह एक नि आषितरै हू न आनी ॥ औ
ते गयंद कीन्या यचल्यौ गयो मोहन सु
ई महा अभिमानी ॥ ३४ ॥ अथ मानी गो
मानि ॥ प्रीति कछू इन ध्यो सन मैं पिर
वाहि रही वहु तैं सरसानी ॥ काहू कठै न पै
म हम न कै हो कही जव सुंदर राधिक
वानी ॥ आगै न मान न बैठे यह जानि कै
चातुरी बात न बहो इहि ठानी ॥ मो हनी

सोंमिसऐसोकियेमनमोहनैआपन
हूंनएमानी ॥३४२॥ चतुरतादोहा ॥ वचन॥
निकरिकरतूतकरिकरैजुचातुरताहि
एसिंगारेकविराजमितिचतुरकहतहैंजा
हि ॥३४३॥ सवैया ॥ पहिलैतूजोहुमिसि
लिवोलिवोलदेषिजोसुनैगीकान
विनीसवत्राहिए ॥ जानिकीरुषा
नोऔरकीलैत्रारैहानीसोईग्र
आनीजोइनौवैवाहिए ॥ ऐसीनिकों
सिकीवोसुंदरकितीकवातइनि
तिमतिनअपाहसिंधुग्याहिए ॥ सु

उपजाइवेकीघातहा पछ्राइवेकीवा
तानिबनाइवेकीभोतिइहिचाहिए
॥उत्तर॥ अन्यच्च॥ तूहै महाजानितोस
मानकोउनाहीआनकहालोंकरैंव
षानिसुंदरवनाइकै तोहितैंनहोहि
हूंओरतैंनहोइयेहुकैसैंहूंजैकरैं
उकोटिकउपाइकै ॥ जैसैंमृतकआप
हीआपनैंहीदेष्याजाइजौंलौंविर
आरसीनदेतहैदिषाइकै ॥ तैसेंवहप
रीतिसपोंसवैसेनरैमनमिलैतव
हीपैजवतूमिलावैल्याइकै ॥उ५॥